Dr. Sunil Kr. 'Suman'
Assistant Professor (Guest)
Dept. of Psychology.
D.B. College Jaynagar
L.N.M.U. Darbhanga

Study material
B.A. Part-II (H)
Paper-IV
Date-16-10-20
Do-Next-class

Neo Freudians

Contribution of Sullivan

(Q). व्यक्तित्व का टिकाऊ पहलू (enduring aspects of personality)- सुल्लीमान ने अपने मनोविज्ञान में व्यक्तित्व के कई ऐसे पहलु पर बल डाला है जो टिकाऊ प्रकृति के होते हैं। ऐसे पहलुओं मे निम्नांकित तीन प्रमुख है - (i). गत्यात्मकता (dynamism) (ii) आत्म-तंत्र (self-system) तथा (iii). मानवीकरण (personification)।

(i). गत्यात्मकता (Dynamism) - सुल्लीमान के मनोविज्ञान में 'गत्यात्मकता' एक ऐसा पद है जिसे शीलगुण (trait) के तुल्य माना गया है। सुल्लीमान के अनुसार गत्यात्मकता से तात्पर्य एक से संगत पैटर्न (consistent pattern) से होता है जो व्यक्ति की परी जिंदगी मे दिखाई देता है। उन्होने गत्यात्मकता को दो भागों में बाँटा है - शरीर के विशेष क्षेत्र मे सम्बंधि गत्यात्मकता (dynamism - related to particular zone of the body) तथा तनाव से संबंधि गत्यात्मकता (dynamism related to tension)।

(ii). आत्म-तंत्र (self system) - आत्म-तंत्र एक ऐसा जटिल तंत्र (complex system) है जो अन्तर्वैयक्तिक सुरक्षा (interpersonal security) को बरकार रखते हुए व्यक्ति की चिंता कम हो जाती है, इस तरह का आत्म-तंत्र सचमुच में उसे किसी परिस्थिति के बारे में एक वास्तविक एवं वस्तुनिष्ठ निर्णय लेने से रोकता है।

(iii). मानवीकरण (personification) - व्यक्तित्व का दूसरा टिकाऊ पहलु मानवीकरण है जिससे तात्पर्य अपने या दूसरे के बारे मे मन में बने एक प्रतिमा या छवि से होता है। सुल्लीमान का मत है कि प्रारंभिक बाल्यवस्था मे पाँच सरल मानवीकरण मे पाँच सरल मानवीकरण विकसित होते है, अच्छी माँ (good mother), बुरी माँ (bad-mother), बुरा-स्वयं (bad me).

जब बच्चे को माँ के साथ किये गए अन्तः क्रियाओं (interactions) से उसमें लिंग उत्पन्न होती है, इस तरह से कहा जा सकता है कि स्वयं नहीं का मानवीकरण द्वारा आत्मन् का विच्छेदित पहलू का प्रतिनिधित्व होता है और उसमें बलनाद संवेग जिसे सुल्लीमान ने अनकैनी (uncanny) कहा है, सम्मिलित होता है।

(3). विकासात्मक अवस्थाएँ (Developmental stages) – सुल्लीमान ने व्यक्तित्व विकास के सात अवस्थाएँ (seven stages) का वर्णन किया गया है। सुल्लीमान के द्वारा बतलाया गया व्यक्तित्व विकास की सात अवस्थाएँ निम्नांकित हैं: –

i. शैशवावस्था (infancy) – यह अवस्था जन्म से लेकर लगभग 24 महीने तक का होता है। जन्म के समय शिशु एक पशु के समान होता है। इसी अवस्था के दौरान शिशु संतान के प्रोटोटैक्सिक विधि से पाराटैक्सिक विधि की ओर अंतरण करता है।

ii. बाल्यावस्था (childhood) – यह अवस्था लगभग पाँच वर्ष की उम्र होने तक की होती है। तल्लीनता से तात्पर्य एक ऐसे उपाय से होता है कि जिसके सहारे बच्चे अपने आप को ऐसे कामों में जिनके करने से उन्हें पुरस्कार मिलता है।

iii. तरुणावस्था (Juvenile era) – यह अवस्था 5–6 साल की अवस्था से प्रारंभ होकर 8–9 साल की अवस्था होती है। इस अवस्था में तीन ऋणात्मक विकास (negative development) भी होते हैं। अवस्था में बच्चे दूसरे लोगों से विशेषकर उन व्यक्तियों से जिन्हें माता-पिता निन्दा करते हैं या नापसंद करते हैं, घृणा करना सीख जाता है।

iv. प्राक् किशोरावस्था (stage of preadolescence) – इस अवस्था की शुरुआत घनिष्ठता की आवश्यकता (need for intimacy) से प्रारंभ होकर यौवनारंभ (puberty) तक का होता है। जिनसे अकेलापन, उसमें उत्सुकता (anxiety) विकसित होती जो उनके आगे के विकास के लिए हानिकारक होते हैं।

v. उत्तर किशोरावस्था (stage of late adolescence) – इस अवस्था की शुरुआत जननांगी क्रियाओं (genital activities) के स्थिरीकरण से प्रारंभ होकर व्यस्कावस्था से स्थायी प्रेम सम्बंध करने तक का होता है। इस अवस्था का अंतिम परिणाम आत्म-सम्मान (self respect) है जिसके आधार पर व्यक्ति दूसरों को स्नेह एवं प्यार देना सीख लेता है।

Next class